International Journal of Web of Multidisciplinary Studies
( Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal )
website: https://ijwos.com OPEN ACCESS E-ISSN : 3049-2424
Volume 3 Issue 3 , March 2026
DOI: https://doi.org/10.71366/ijwos03032692356

# मुगल पतन से 1857 के विद्रोह तक बिहार में राजनीतिक परिवर्तन और उसका व्यापार पर प्रभाव

**बीरसेन कुमार पासवान**
*स्नातकोत्तर इतिहास विभाग*
*तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर*

***Article Info***

***Article History:***

*Published:19 March 2026*

***Publication Issue:***
*Volume 3, Issue 3*
*March-2026*

***Page Number:***
*424-432*

***Corresponding Author:***
*बीरसेन कुमार पासवान*

***Abstract:***

अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत भारतीय इतिहास में गहरे राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक परिवर्तनों का काल मानी जाती है। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही मुगल साम्राज्य की केंद्रीय शक्ति धीरे–धीरे कमजोर पड़ने लगी। लंबे समय तक चले युद्धों, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, उत्तराधिकार संघर्षों और प्रांतीय सूबेदारों की बढ़ती स्वायत्तता के कारण मुगल शासन की एकता और नियंत्रण कमजोर होता गया। परिणामस्वरूप भारत के विभिन्न भागों में क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ और अनेक प्रांतों में स्थानीय शासकों तथा नवाबों ने अपेक्षाकृत स्वतंत्र शासन स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया। इस राजनीतिक विघटन का प्रभाव केवल सत्ता संरचना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव आर्थिक जीवन, व्यापारिक गतिविधियों, राजस्व व्यवस्था तथा बाजार प्रणाली पर भी पड़ा। इसी व्यापक ऐतिहासिक परिवर्तन के संदर्भ में बिहार का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण था। भौगोलिक दृष्टि से बिहार गंगा के उपजाऊ मैदानों में स्थित था और यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही कृषि उत्पादन, आंतरिक व्यापार और नदी–आधारित परिवहन का प्रमुख केंद्र रहा था। गंगा, कोसी, गंडक और सोन जैसी नदियाँ न केवल कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती थीं, बल्कि ये व्यापारिक मार्गों के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण थीं। इन नदियों के माध्यम से बिहार का संपर्क बंगाल, उत्तर भारत और मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों से बना हुआ था। फलस्वरूप यहाँ अनाज, नमक, कपड़ा, अफीम, चीनी, लाख तथा अन्य कृषि और हस्तशिल्प उत्पादों का व्यापक व्यापार होता था। मुगल साम्राज्य के कमजोर पड़ने के साथ–साथ प्रशासनिक नियंत्रण में कमी आई और प्रांतीय स्तर पर नई शक्ति संरचनाएँ विकसित होने लगीं। बंगाल के नवाबों के अधीन बिहार भी उनके प्रशासनिक क्षेत्र का महत्वपूर्ण भाग था। नवाबों की राजस्व नीतियों, व्यापारिक करों तथा स्थानीय जमींदारों की भूमिका ने बिहार की आर्थिक संरचना को प्रभावित किया। इसी काल में व्यापारिक गतिविधियों में निजी व्यापारियों, साहूकारों और स्थानीय बाजारों की भूमिका भी अधिक स्पष्ट होकर सामने आई। साथ ही, पटना, मुंगेर और भागलपुर जैसे नगर व्यापारिक केंद्रों के रूप में उभरने लगे, जहाँ से विभिन्न वस्तुओं का आंतरिक तथा बाहरी व्यापार संचालित होता था।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक आते–आते एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन सामने आया, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय व्यापारिक और राजनीतिक संरचना में हस्तक्षेप करना शुरू किया। प्रारंभ में कंपनी का उद्देश्य केवल व्यापारिक लाभ प्राप्त करना था, किंतु धीरे–धीरे उसने प्रशासनिक और राजनीतिक शक्ति भी प्राप्त कर ली। इस प्रक्रिया ने बिहार के व्यापारिक ढाँचे, बाजार व्यवस्था और व्यापारिक नेटवर्क को गहराई से प्रभावित किया। कंपनी की नीतियों, व्यापारिक एकाधिकार तथा नई राजस्व व्यवस्थाओं ने पारंपरिक व्यापारिक संरचनाओं को परिवर्तित कर दिया और स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों तथा कृषकों के आर्थिक जीवन पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी का बिहार राजनीतिक परिवर्तन, प्रशासनिक पुनर्गठन और आर्थिक पुनर्संरचना की प्रक्रियाओं से गुजर रहा था। मुगल साम्राज्य के पतन, बंगाल के नवाबों के शासन तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के उदय ने इस क्षेत्र के व्यापारिक तंत्र, बाजार व्यवस्था और आर्थिक संबंधों को नई दिशा प्रदान की। अतः इस काल में बिहार के व्यापार और वाणिज्य का अध्ययन न केवल क्षेत्रीय आर्थिक इतिहास को समझने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार राजनीतिक परिवर्तनों ने आर्थिक संरचनाओं और व्यापारिक नेटवर्क को प्रभावित किया।[1]

***Keywords:*** मुगल पतन, क्षेत्रीय शक्ति, बंगाल नवाब, जमींदारी, राजस्व नीति, कंपनी शासन, पटना व्यापार


Copyright © 2025 The Author(s) : This is an open access article under the CC BY license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)

## मुगल शासन के पतन का प्रभाव

अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मुगल साम्राज्य की शक्ति के क्षीण होने का प्रभाव भारत के राजनीतिक, प्रशासनिक और आर्थिक जीवन पर व्यापक रूप से दिखाई देने लगा। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद केंद्रीय सत्ता की पकड़ धीरे–धीरे कमजोर पड़ने लगी, जिसके परिणामस्वरूप प्रांतीय प्रशासन पर सम्राट का नियंत्रण कम होता गया। उत्तराधिकार संघर्ष, दरबारी षड्यंत्र, निरंतर युद्धों और प्रशासनिक भ्रष्टाचार के कारण मुगल शासन की स्थिरता प्रभावित हुई। इस परिस्थिति में विभिन्न प्रांतों के सूबेदार, जमींदार और स्थानीय शासक अधिक स्वायत्त होते चले गए। बिहार, जो उस समय बंगाल सूबे का एक महत्वपूर्ण भाग था, इस परिवर्तन से विशेष रूप से प्रभावित हुआ। प्रशासनिक दृष्टि से बिहार का नियंत्रण बंगाल के नवाबों के हाथों में था, और जैसे–जैसे मुगल सत्ता कमजोर होती गई, वैसे–वैसे नवाबों तथा स्थानीय जमींदारों की भूमिका अधिक प्रभावशाली होती गई।[2] इससे प्रशासनिक संरचना में परिवर्तन आया और कई स्थानों पर स्थानीय स्तर पर सत्ता का केंद्रीकरण देखने को मिला। मुगल शासन के कमजोर पड़ने का सीधा प्रभाव व्यापारिक गतिविधियों और आर्थिक जीवन पर भी पड़ा। केंद्रीय सत्ता की शक्ति कम होने से व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और प्रशासनिक नियंत्रण में भी शिथिलता आने लगी। पहले जहाँ मुगल प्रशासन द्वारा प्रमुख मार्गों, नगरों और व्यापारिक केंद्रों की सुरक्षा की व्यवस्था की जाती थी, वहीं अब कई क्षेत्रों में यह व्यवस्था कमजोर पड़ गई। इसके परिणामस्वरूप व्यापारियों को कभी–कभी लुटेरों, स्थानीय सरदारों या अस्थिर राजनीतिक परिस्थितियों के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। लंबी दूरी के व्यापार में जोखिम बढ़ गया और व्यापारिक गतिविधियों की गति कुछ हद तक प्रभावित हुई। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानीय शक्तियों द्वारा करों और शुल्कों की वसूली में भी अनियमितता बढ़ने लगी, जिससे व्यापारिक लागत में वृद्धि हुई और व्यापारियों के लिए आर्थिक चुनौतियाँ उत्पन्न हुईं।[3] फिर भी यह कहना उचित नहीं होगा कि मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही बिहार में व्यापारिक गतिविधियाँ समाप्त हो गईं। वास्तव में इस काल में स्थानीय व्यापारिक वर्ग – जैसे व्यापारी, साहूकार, बनिये और बिचौलिए – ने आर्थिक गतिविधियों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन लोगों ने अपने पारंपरिक सामाजिक और आर्थिक नेटवर्क के माध्यम से व्यापारिक संपर्कों को बनाए रखा। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादन लगातार जारी रहा और वहाँ से उत्पन्न वस्तुएँ – जैसे अनाज, गुड़, चीनी, तिलहन, नमक और अन्य कृषि उत्पाद स्थानीय मंडियों और कस्बों के बाजारों तक पहुँचती रहीं। ये बाजार क्षेत्रीय व्यापार के केंद्र के रूप में कार्य करते थे, जहाँ से वस्तुओं का वितरण आसपास के क्षेत्रों में किया जाता था। इस प्रकार ग्रामीण उत्पादन और शहरी बाजारों के बीच आर्थिक संबंधों की निरंतरता बनी रही, जिसने व्यापारिक गतिविधियों को पूरी तरह ठहरने नहीं दिया।[4]

इसके अतिरिक्त बिहार की भौगोलिक स्थिति भी व्यापारिक गतिविधियों के निरंतर बने रहने का एक महत्वपूर्ण कारण थी। गंगा नदी और उसकी सहायक नदियाँ – जैसे गंडक, कोसी और सोन प्राकृतिक परिवहन मार्ग के रूप में कार्य करती थीं। इन नदी मार्गों के माध्यम से वस्तुओं का परिवहन अपेक्षाकृत सरल और सस्ता था, जिसके कारण बिहार का संपर्क बंगाल, उत्तर भारत और अन्य क्षेत्रों के साथ बना रहा। नदी मार्गों द्वारा अनाज, कपड़ा, नमक, अफीम और अन्य वस्तुओं का आदान–प्रदान होता था, जिससे व्यापारिक नेटवर्क सक्रिय बने रहे।[5] पटना, मुंगेर और भागलपुर जैसे नगर इस काल में व्यापारिक केंद्रों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जहाँ विभिन्न वस्तुओं का क्रय–विक्रय और वितरण होता था। इस प्रकार स्पष्ट है कि मुगल शासन के पतन ने बिहार की प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित अवश्य किया, परन्तु यह प्रभाव पूर्ण रूप से विनाशकारी नहीं था। राजनीतिक अस्थिरता और प्रशासनिक कमजोरी के बावजूद स्थानीय व्यापारिक वर्ग, पारंपरिक बाजार व्यवस्था और नदी–आधारित परिवहन प्रणाली ने व्यापारिक गतिविधियों को जीवित बनाए रखा। यही कारण है कि अठारहवीं शताब्दी के इस संक्रमणकाल में बिहार की अर्थव्यवस्था पूरी तरह ठहरने के बजाय धीरे–धीरे नए स्वरूप में विकसित होती रही। आगे चलकर बंगाल के नवाबों की नीतियों और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के उदय ने इस व्यापारिक संरचना को और अधिक प्रभावित किया तथा क्षेत्र की आर्थिक दिशा को नई रूपरेखा प्रदान की।[6]

## बंगाल के नवाबों का शासन और व्यापार

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में बिहार राजनीतिक रूप से बंगाल सूबे के अधीन था और यहाँ के प्रशासनिक तथा आर्थिक मामलों पर बंगाल के नवाबों का नियंत्रण स्थापित हो चुका था। मुगल साम्राज्य के कमजोर पड़ने के बाद बंगाल के नवाबों ने अपने शासन को अधिक संगठित और प्रभावी बनाने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप प्रांतीय प्रशासन में अपेक्षाकृत स्थिरता आई। इस स्थिरता का सकारात्मक प्रभाव आर्थिक जीवन और व्यापारिक गतिविधियों पर भी पड़ा। नवाबों

की प्राथमिकता राजस्व संग्रह को सुदृढ़ करना और प्रांत की आर्थिक समृद्धि को बनाए रखना था, इसलिए उन्होंने व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की नीति अपनाई।[7] बिहार की भौगोलिक स्थिति, उपजाऊ भूमि और नदी–आधारित परिवहन व्यवस्था ने इसे व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया था। गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के माध्यम से बिहार का संपर्क बंगाल, उत्तर भारत और अन्य क्षेत्रों से बना हुआ था, जिससे वस्तुओं का आदान–प्रदान अपेक्षाकृत सुगमता से होता था। नवाबों के शासन में बिहार के कई नगर व्यापारिक केंद्रों के रूप में विकसित होने लगे।[8] विशेष रूप से पटना, भागलपुर और मुंगेर इस काल में महत्वपूर्ण बाजार और व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र बनकर उभरे। इन नगरों में स्थानीय तथा बाहरी व्यापारियों की सक्रियता बढ़ने लगी और यहाँ विभिन्न वस्तुओं का क्रय–विक्रय तथा वितरण होता था। इन नगरों के बाजार न केवल आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए व्यापारिक केंद्र थे, बल्कि दूर–दराज के क्षेत्रों से आने वाले व्यापारियों के लिए भी महत्वपूर्ण स्थल थे। ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित कृषि और हस्तशिल्प वस्तुएँ इन नगरों तक लाई जाती थीं, जहाँ से उनका वितरण अन्य क्षेत्रों में किया जाता था। इस प्रकार ग्रामीण उत्पादन और शहरी बाजारों के बीच घनिष्ठ आर्थिक संबंध स्थापित हो गए थे, जिसने क्षेत्रीय व्यापार को मजबूती प्रदान की।[9]

पटना इस काल में विशेष रूप से एक प्रमुख अंतर–क्षेत्रीय व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। यहाँ नमकशोरा (साल्टपीटर), अफीम, कपड़ा तथा विभिन्न कृषि उत्पादों का व्यापक व्यापार होता था। नमकशोरा, जिसका उपयोग बारूद बनाने में किया जाता था, यूरोपीय देशों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण वस्तु थी और इसकी भारी मांग थी। इसी प्रकार अफीम का उत्पादन और व्यापार भी बिहार की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग बन गया था। इन वस्तुओं की मांग भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ–साथ यूरोपीय व्यापारियों के बीच भी बढ़ रही थी, जिसके कारण पटना और आसपास के क्षेत्रों का व्यापारिक महत्व लगातार बढ़ता गया।[10] भागलपुर और मुंगेर भी वस्त्र, धातु और अन्य हस्तशिल्प उत्पादों के लिए प्रसिद्ध थे, जहाँ स्थानीय कारीगरों और व्यापारियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। बंगाल के नवाबों के शासन में व्यापारियों को अपेक्षाकृत स्वतंत्रता प्राप्त थी, जिसके कारण व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार के लिए अनुकूल वातावरण बना रहा। नवाबों ने व्यापारिक करों और राजस्व की व्यवस्था के माध्यम से व्यापार को नियंत्रित अवश्य किया, परंतु सामान्यतः उन्होंने व्यापारिक गतिविधियों में अत्यधिक हस्तक्षेप नहीं किया। इससे स्थानीय व्यापारियों, साहूकारों और बिचौलियों को अपने व्यापारिक नेटवर्क को विकसित करने का अवसर मिला। इसके साथ ही यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ – जैसे अंग्रेज, फ्रांसीसी और डच – भी इस क्षेत्र के व्यापार में सक्रिय हो गई थीं, जिन्होंने बिहार के उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा दिया।[11]

इस प्रकार बंगाल के नवाबों के शासनकाल में बिहार में व्यापारिक गतिविधियों को अपेक्षाकृत अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हुईं। प्रशासनिक स्थिरता, उपजाऊ कृषि क्षेत्र, नदी–आधारित परिवहन प्रणाली और स्थानीय व्यापारिक वर्ग की सक्रियता ने मिलकर बिहार को अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक क्षेत्र के रूप में स्थापित किया। हालांकि बाद में यूरोपीय कंपनियों के बढ़ते हस्तक्षेप और राजनीतिक संघर्षों ने इस संतुलन को प्रभावित किया, परंतु नवाबों के शासनकाल में बिहार का व्यापारिक जीवन अपेक्षाकृत सक्रिय और समृद्ध बना रहा।

## ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का उदय

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीतिक और आर्थिक संरचना में एक महत्वपूर्ण और निर्णायक परिवर्तन तब आया जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने धीरे–धीरे अपने व्यापारिक प्रभाव को राजनीतिक सत्ता में परिवर्तित करना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में कंपनी केवल एक व्यापारिक संस्था के रूप में भारत आई थी और उसका मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजारों से वस्तुओं की खरीद और यूरोप में उनके व्यापार के माध्यम से लाभ प्राप्त करना था। किन्तु समय के साथ भारत की आंतरिक राजनीतिक परिस्थितियों, मुगल साम्राज्य की कमजोर होती शक्ति और प्रांतीय शासकों के बीच चल रहे संघर्षों का लाभ उठाकर कंपनी ने अपने प्रभाव का विस्तार करना शुरू कर दिया।[12] 1757 ई. में प्लासी के युद्ध ने इस प्रक्रिया को एक नया मोड़ दिया। इस युद्ध में बंगाल के नवाब की पराजय के बाद कंपनी को बंगाल की राजनीति और प्रशासन में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया। इसके बाद 1764 ई. के बक्सर के युद्ध में कंपनी की विजय ने उसकी शक्ति को और अधिक सुदृढ़ कर दिया। अंततः 1765 ई. में मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्रदान कर दिए गए। इन अधिकारों के अंतर्गत कंपनी को इन क्षेत्रों से राजस्व संग्रह करने तथा आर्थिक प्रशासन को संचालित करने का अधिकार मिल गया। इस प्रकार कंपनी केवल एक व्यापारी संस्था न रहकर एक

राजनीतिक और प्रशासनिक शक्ति के रूप में स्थापित हो गई, जिसका बिहार की आर्थिक और व्यापारिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा।[13]

दीवानी अधिकार प्राप्त करने के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने बिहार और बंगाल के आर्थिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग अपने हितों के लिए करना प्रारम्भ किया। कंपनी की नीतियों का मुख्य उद्देश्य राजस्व संग्रह को बढ़ाना और व्यापारिक लाभ को अधिकतम करना था।[14] इसके परिणामस्वरूप व्यापारिक संरचना में धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगे। पहले जहाँ स्थानीय व्यापारी, साहूकार, बनिये और बिचौलिए व्यापारिक गतिविधियों में प्रमुख भूमिका निभाते थे, वहीं अब कंपनी ने कई महत्वपूर्ण वस्तुओं के उत्पादन, संग्रह और व्यापार पर अपना नियंत्रण स्थापित करना शुरू कर दिया। कंपनी के अधिकारी और एजेंट विभिन्न क्षेत्रों में व्यापारिक गतिविधियों को नियंत्रित करने लगे, जिससे पारंपरिक व्यापारिक नेटवर्क पर उनका प्रभाव बढ़ गया। इससे व्यापार का स्वरूप अधिक संगठित और नियंत्रित हो गया, किन्तु यह नियंत्रण मुख्यतः कंपनी के हितों की पूर्ति के लिए था। परिणामस्वरूप स्थानीय व्यापारियों की स्वतंत्रता धीरे–धीरे सीमित होने लगी और वे कंपनी की नीतियों तथा नियमों के अधीन कार्य करने के लिए बाध्य हो गए।[15]

इस काल में नमकशोरा (साल्टपीटर), अफीम और नील जैसी वस्तुएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण व्यापारिक वस्तुओं के रूप में उभरकर सामने आईं। बिहार नमकशोरा के उत्पादन के लिए लंबे समय से प्रसिद्ध था और इसका उपयोग बारूद बनाने में किया जाता था। यूरोप में युद्धों और सैन्य गतिविधियों के कारण इसकी मांग अत्यधिक बढ़ गई थी, जिसके कारण ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने इसके उत्पादन और व्यापार पर विशेष ध्यान दिया। इसी प्रकार अफीम का उत्पादन भी बिहार के कई क्षेत्रों में किया जाता था और इसका निर्यात एशिया तथा अन्य विदेशी बाजारों में किया जाता था।[16] नील की खेती और उसका व्यापार भी कंपनी के नियंत्रण में आने लगा, क्योंकि यूरोप में नीले रंग की मांग अधिक थी। कंपनी ने इन वस्तुओं के उत्पादन, संग्रह और निर्यात की व्यवस्था को अपने व्यापारिक हितों के अनुसार संगठित किया। इसके परिणामस्वरूप इन वस्तुओं का व्यापार अधिक संगठित रूप से होने लगा, किन्तु इसका लाभ मुख्यतः कंपनी और उसके अधिकारियों को ही प्राप्त होता था।[17]

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों के कारण पारंपरिक व्यापारी वर्ग और स्थानीय व्यापारिक संस्थाओं की स्थिति पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। पहले जो व्यापारी स्वतंत्र रूप से विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करते थे, उन्हें अब कंपनी के नियंत्रण और नियमों के अधीन कार्य करना पड़ता था। कई स्थानों पर कंपनी ने अपने एजेंटों, गोदामों और ठेकेदारों के माध्यम से व्यापारिक गतिविधियों को संचालित करना शुरू कर दिया। इससे स्थानीय व्यापारियों की भूमिका सीमित हो गई और कई छोटे व्यापारी धीरे–धीरे आर्थिक रूप से कमजोर होने लगे।[18] इसके अतिरिक्त कंपनी की राजस्व नीतियों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित किया। किसानों से अधिक राजस्व वसूला जाने लगा और कई क्षेत्रों में उन्हें कंपनी की आवश्यकताओं के अनुसार विशेष फसलों – जैसे नील या अफीम की खेती करने के लिए प्रोत्साहित या बाध्य किया जाता था। इससे पारंपरिक कृषि प्रणाली और खाद्यान्न उत्पादन पर भी प्रभाव पड़ा तथा ग्रामीण समाज की आर्थिक संरचना में असंतुलन उत्पन्न होने लगा।[19] इसके साथ ही कंपनी के शासन के अंतर्गत व्यापार का स्वरूप भी अधिकाधिक औपनिवेशिक हितों के अनुरूप ढलने लगा। बिहार और बंगाल के प्राकृतिक संसाधनों तथा कृषि उत्पादन का उपयोग मुख्यतः विदेशी बाजारों की मांग को पूरा करने के लिए किया जाने लगा। स्थानीय आवश्यकताओं और पारंपरिक व्यापारिक संतुलन की अपेक्षा विदेशी व्यापार और निर्यात को अधिक महत्व दिया गया। इसके कारण क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदलने लगा और व्यापारिक गतिविधियाँ धीरे–धीरे कंपनी के नियंत्रण में संगठित होती चली गईं।[20]

इस प्रकार स्पष्ट है कि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के उदय ने बिहार की आर्थिक और व्यापारिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। जहाँ एक ओर कंपनी के नियंत्रण में व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार हुआ और विदेशी बाजारों के साथ संपर्क बढ़ा, वहीं दूसरी ओर इस व्यवस्था ने स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों और कृषकों की आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। पारंपरिक व्यापारिक नेटवर्क और संस्थाएँ धीरे–धीरे कमजोर पड़ने लगीं और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था औपनिवेशिक व्यापारिक हितों के अनुरूप पुनर्गठित होने लगी। इस प्रक्रिया ने आगे चलकर बिहार की सामाजिक और आर्थिक संरचना में भी व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए, जिनका प्रभाव उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।[21]

## व्यापारिक संरचना में परिवर्तन

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की स्थापना के बाद बिहार की आर्थिक और व्यापारिक संरचना में धीरे–धीरे गहरे परिवर्तन आने लगे। कंपनी का मुख्य उद्देश्य राजस्व संग्रह को बढ़ाना और अपने व्यापारिक हितों को सुरक्षित करना था, इसलिए उसने प्रशासनिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में कई नीतिगत बदलाव किए। विशेष रूप से राजस्व प्रणाली और भूमि व्यवस्था में किए गए परिवर्तन का प्रभाव सीधे तौर पर कृषि उत्पादन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और व्यापारिक गतिविधियों पर पड़ा।[22] पहले जहाँ भूमि से संबंधित व्यवस्थाएँ अपेक्षाकृत लचीली थीं और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संचालित होती थीं, वहीं ब्रिटिश प्रशासन ने इन्हें अधिक व्यवस्थित और स्थायी स्वरूप देने का प्रयास किया। इसी क्रम में 1793 ई. में स्थायी बंदोबस्त की व्यवस्था लागू की गई, जिसके अंतर्गत जमींदारों को भूमि का स्थायी स्वामी मान लिया गया और उनसे निश्चित राजस्व की वसूली की जाने लगी। इस व्यवस्था ने बिहार की पारंपरिक भूमि प्रणाली को मूल रूप से बदल दिया। स्थायी बंदोबस्त के लागू होने से जमींदारों और किसानों के बीच संबंधों की प्रकृति में भी परिवर्तन आया।[23] पहले जहाँ जमींदार और कृषक के बीच संबंध अपेक्षाकृत पारंपरिक और सामाजिक आधार पर स्थापित थे, वहीं अब यह संबंध अधिक आर्थिक और राजस्व आधारित हो गया। जमींदारों पर निश्चित राजस्व समय पर जमा करने का दबाव था, इसलिए वे किसानों से अधिक लगान वसूलने लगे। इसके परिणामस्वरूप किसानों की आर्थिक स्थिति कई स्थानों पर कमजोर हो गई और उन्हें अधिक उत्पादन करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस स्थिति का अप्रत्यक्ष प्रभाव व्यापारिक गतिविधियों पर भी पड़ा, क्योंकि कृषि उत्पादन में होने वाले परिवर्तन सीधे बाजार और व्यापार को प्रभावित करते थे।[24] जब उत्पादन बढ़ता था तो बाजारों में वस्तुओं की उपलब्धता भी बढ़ती थी, जबकि आर्थिक दबाव के कारण कई किसानों की स्थिति अस्थिर हो जाती थी, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में असंतुलन उत्पन्न होता था। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश प्रशासन ने व्यापार और उद्योग से संबंधित नीतियों में भी कई परिवर्तन किए, जिनका प्रभाव बिहार की व्यापारिक संरचना पर पड़ा। कंपनी की आर्थिक नीति मुख्यतः इस उद्देश्य से संचालित होती थी कि भारत से कच्चे माल का निर्यात अधिक से अधिक किया जाए और ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं के लिए भारतीय बाजार उपलब्ध कराया जाए।[25] इस नीति के कारण भारतीय वस्तुओं के उत्पादन और वितरण के स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा। स्थानीय उद्योगों और कुटीर उत्पादन, जो पहले क्षेत्रीय बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करते थे, धीरे–धीरे दबाव में आने लगे। ब्रिटेन से आने वाली मशीन से निर्मित वस्तुओं ने भारतीय हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के लिए प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर दी, जिससे कई पारंपरिक उद्योग कमजोर पड़ने लगे।[26]

दूसरी ओर कुछ विशेष कृषि और वाणिज्यिक वस्तुओं के उत्पादन को निर्यात की दृष्टि से बढ़ावा दिया गया। नील, अफीम और कुछ अन्य फसलों का उत्पादन बढ़ाया गया, क्योंकि इनकी मांग विदेशी बाजारों में अधिक थी। इसके कारण कई क्षेत्रों में किसानों को खाद्यान्न फसलों के स्थान पर इन वाणिज्यिक फसलों की खेती करने के लिए प्रेरित या बाध्य किया जाने लगा। इस प्रक्रिया ने कृषि और व्यापार दोनों की संरचना को प्रभावित किया। व्यापारिक गतिविधियाँ अब अधिकाधिक उन वस्तुओं के इर्द–गिर्द केंद्रित होने लगीं जिनसे कंपनी को अधिक लाभ प्राप्त हो सकता था। परिणामस्वरूप स्थानीय आवश्यकताओं की अपेक्षा विदेशी बाजारों की मांग को अधिक महत्व दिया जाने लगा।[27] इस प्रकार ब्रिटिश शासन के अंतर्गत बिहार की व्यापारिक संरचना में एक व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। राजस्व और भूमि व्यवस्था में किए गए सुधारों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नया स्वरूप दिया, जबकि व्यापारिक नीतियों ने उत्पादन और वितरण की दिशा को बदल दिया। स्थानीय उद्योगों और पारंपरिक व्यापारिक संस्थाओं की भूमिका धीरे–धीरे कमजोर पड़ने लगी और व्यापार का संतुलन क्रमशः ब्रिटिश आर्थिक हितों के पक्ष में झुकने लगा। यह परिवर्तन केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने बिहार की सामाजिक और ग्रामीण संरचना पर भी गहरा प्रभाव डाला, जिसके परिणाम आगे चलकर उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे।[28]

## बाजार और व्यापारिक केंद्रों का विकास

अठारहवीं शताब्दी के दौरान बिहार में हुए व्यापक राजनीतिक परिवर्तनों – जैसे मुगल साम्राज्य का पतन, बंगाल के नवाबों का उदय और बाद में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता की स्थापना का प्रभाव प्रशासनिक और आर्थिक संरचना पर अवश्य पड़ा, किन्तु इन परिवर्तनों के बावजूद बिहार के अनेक नगर व्यापारिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र बने रहे। बिहार की भौगोलिक स्थिति, उपजाऊ गंगा मैदान, प्रचुर कृषि उत्पादन और नदी–आधारित परिवहन प्रणाली ने इस क्षेत्र को प्राचीन काल से ही व्यापार के लिए अत्यंत अनुकूल बनाया था।[29] इसी कारण राजनीतिक अस्थिरता और सत्ता परिवर्तन के

दौर में भी यहाँ की आर्थिक गतिविधियाँ पूरी तरह बाधित नहीं हुईं। ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प वस्तुएँ और अन्य स्थानीय उत्पाद विभिन्न नगरों के बाजारों तक पहुँचते थे, जहाँ से उनका क्रय–विक्रय और वितरण व्यापक क्षेत्र में किया जाता था। इस प्रकार बिहार के नगर न केवल व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र थे, बल्कि वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय व्यापार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी कार्य करते थे। इन नगरों में लगने वाले साप्ताहिक हाट, स्थायी बाजार और मंडियाँ स्थानीय आर्थिक जीवन का आधार थीं, जहाँ किसान, कारीगर और व्यापारी अपने उत्पादों का आदान–प्रदान करते थे। इस काल में पटना, गया, भागलपुर और मुजफ्फरपुर जैसे नगर क्षेत्रीय व्यापार के प्रमुख केंद्रों के रूप में विकसित हुए। इन नगरों का महत्व केवल स्थानीय व्यापार तक सीमित नहीं था, बल्कि ये दूर–दराज के क्षेत्रों के व्यापारिक नेटवर्क से भी जुड़े हुए थे। पटना विशेष रूप से एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और वाणिज्यिक नगर के रूप में प्रसिद्ध था। यहाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुओं – जैसे कृषि उत्पाद, कपड़ा, नमकशोरा (साल्टपीटर), अफीम, मसाले, धातु उत्पाद और अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुओं का व्यापक व्यापार होता था। नमकशोरा का व्यापार इस क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता थी, क्योंकि इसका उपयोग बारूद निर्माण में किया जाता था और यूरोपीय देशों में इसकी मांग अत्यधिक थी। इसी प्रकार अफीम का व्यापार भी पटना और उसके आसपास के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में विकसित हुआ। भागलपुर अपने रेशमी वस्त्रों और कपड़ा उद्योग के लिए प्रसिद्ध था, जहाँ स्थानीय कारीगरों द्वारा निर्मित वस्त्र दूर–दूर तक भेजे जाते थे। गया और मुजफ्फरपुर भी आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण बाजार केंद्र के रूप में कार्य करते थे, जहाँ किसान अपने कृषि उत्पाद लाकर बेचते थे और आवश्यक वस्तुएँ खरीदते थे। इन नगरों में व्यापारी वर्ग, साहूकार, बिचौलिए और परिवहन से जुड़े लोग आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते थे, जिससे बाजारों में निरंतर व्यापारिक गतिशीलता बनी रहती थी।[30]

इन व्यापारिक केंद्रों के विकास में परिवहन व्यवस्था की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उस समय सड़क मार्ग सीमित और कई स्थानों पर असुविधाजनक थे, इसलिए नदियों के माध्यम से होने वाला परिवहन व्यापार का प्रमुख साधन था। बिहार की प्रमुख नदियाँ विशेष रूप से गंगा तथा उसकी सहायक नदियाँ जैसे गंडक, कोसी और सोन प्राकृतिक परिवहन मार्ग के रूप में कार्य करती थीं। इन नदी मार्गों के माध्यम से विभिन्न वस्तुओं का परिवहन अपेक्षाकृत सरल, सस्ता और सुरक्षित था। व्यापारी बड़ी–बड़ी नौकाओं और नावों के माध्यम से अनाज, कपड़ा, नमकशोरा, अफीम, गुड़, तेल और अन्य वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे। गंगा नदी विशेष रूप से बिहार के व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इसके माध्यम से बिहार का संपर्क बंगाल के प्रमुख बंदरगाहों और उत्तर भारत के व्यापारिक नगरों से स्थापित था। इस कारण बिहार के उत्पाद न केवल स्थानीय बाजारों तक सीमित रहते थे, बल्कि उन्हें दूरस्थ क्षेत्रों तक भी पहुँचाया जाता था।[31] नदी मार्गों के अतिरिक्त छोटे–छोटे आंतरिक व्यापारिक नेटवर्क भी विकसित हो चुके थे। ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादित वस्तुएँ पहले स्थानीय हाटों और छोटे बाजारों तक पहुँचती थीं, जहाँ से व्यापारी उन्हें बड़े नगरों की मंडियों तक ले जाते थे। इन मंडियों में वस्तुओं का संग्रह, भंडारण और पुनः वितरण किया जाता था। इसके बाद व्यापारी इन वस्तुओं को अन्य क्षेत्रों में भेजते थे, जिससे एक व्यापक व्यापारिक नेटवर्क का निर्माण होता था। इस नेटवर्क में किसान, कारीगर, व्यापारी, साहूकार, बिचौलिए और परिवहन से जुड़े लोग सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। इससे न केवल आर्थिक गतिविधियों को गति मिलती थी, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संपर्क भी विकसित होते थे। नगरों के बाजार केवल आर्थिक लेन–देन के केंद्र ही नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक जीवन, सूचना के आदान–प्रदान और सांस्कृतिक संपर्क के भी महत्वपूर्ण स्थल बन चुके थे।[32]

इस प्रकार स्पष्ट है कि अठारहवीं शताब्दी में बिहार के बाजार और व्यापारिक केंद्रों का विकास एक सतत प्रक्रिया के रूप में जारी रहा। राजनीतिक परिवर्तन और प्रशासनिक उतार–चढ़ाव के बावजूद व्यापारिक गतिविधियाँ पूरी तरह बाधित नहीं हुईं, बल्कि स्थानीय आर्थिक संरचना, कृषि उत्पादन और नदी–आधारित परिवहन प्रणाली के कारण वे निरंतर विकसित होती रहीं। पटना, गया, भागलपुर और मुजफ्फरपुर जैसे नगर क्षेत्रीय तथा अंतर–क्षेत्रीय व्यापार के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित रहे, जबकि गंगा और अन्य नदियों के माध्यम से विकसित परिवहन प्रणाली ने इन व्यापारिक गतिविधियों को सुदृढ़ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप बिहार का व्यापारिक जीवन अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में भी सक्रिय बना रहा और यह क्षेत्र पूर्वी भारत के प्रमुख आर्थिक और व्यापारिक क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखने में सफल रहा।

## 1857 के विद्रोह से पूर्व की स्थिति

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक, विशेष रूप से 1857 के विद्रोह से पूर्व के दशकों में, बिहार की आर्थिक और व्यापारिक संरचना में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे थे। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रशासनिक, राजस्व तथा आर्थिक नीतियों के माध्यम से इस क्षेत्र पर अपना नियंत्रण सुदृढ़ कर लिया था। 1765 ई. में दीवानी अधिकार प्राप्त करने के बाद कंपनी ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के राजस्व संग्रह तथा आर्थिक प्रशासन को अपने नियंत्रण में ले लिया, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ की पारंपरिक आर्थिक संरचना धीरे–धीरे बदलने लगी। कंपनी की प्राथमिकता अधिक से अधिक राजस्व प्राप्त करना और व्यापारिक लाभ को बढ़ाना था, इसलिए उसने भूमि व्यवस्था, कर प्रणाली और व्यापारिक गतिविधियों को अपने हितों के अनुसार संगठित करना प्रारम्भ किया।[33] इससे पहले जहाँ व्यापारिक व्यवस्था अपेक्षाकृत स्थानीय और पारंपरिक ढाँचे पर आधारित थी, वहीं अब यह धीरे–धीरे औपनिवेशिक नियंत्रण और वैश्विक व्यापारिक आवश्यकताओं से जुड़ने लगी। इस परिवर्तन ने बिहार की अर्थव्यवस्था को एक नए स्वरूप की ओर अग्रसर किया, जिसमें स्थानीय व्यापारिक ढाँचा, कृषि उत्पादन और बाजार व्यवस्था सभी प्रभावित हुए। ब्रिटिश प्रशासन की आर्थिक नीतियों का सबसे अधिक प्रभाव कृषि उत्पादन और उससे जुड़े व्यापारिक तंत्र पर पड़ा। कंपनी ने उन वस्तुओं के उत्पादन को विशेष महत्व दिया जिनकी मांग अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अधिक थी। परिणामस्वरूप नील, अफीम और नमकशोरा जैसी वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार को बढ़ावा दिया गया। बिहार के कई क्षेत्रों में इन फसलों की खेती का विस्तार हुआ और इनके व्यापार में कंपनी की सक्रिय भूमिका स्थापित हो गई। कई बार किसानों को इन फसलों की खेती करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित किया जाता था, जिससे कृषि का स्वरूप भी बदलने लगा। इससे पारंपरिक खाद्यान्न उत्पादन पर प्रभाव पड़ा और कई क्षेत्रों में कृषि संतुलन प्रभावित हुआ। इसी प्रकार नमकशोरा, जो बारूद निर्माण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, बिहार की प्रमुख व्यापारिक वस्तु बना रहा और इसका निर्यात विदेशी बाजारों में किया जाता था। इन वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार में वृद्धि से बिहार का आर्थिक जीवन औपनिवेशिक व्यापारिक नेटवर्क से अधिक गहराई से जुड़ने लगा।[34]

इसके साथ ही ब्रिटिश व्यापारिक नीतियों का प्रभाव स्थानीय उद्योगों और पारंपरिक कुटीर उत्पादन पर भी पड़ा। पहले बिहार के अनेक नगर और कस्बे हस्तशिल्प, वस्त्र निर्माण और अन्य कुटीर उद्योगों के लिए प्रसिद्ध थे। स्थानीय कारीगरों द्वारा निर्मित वस्तुएँ क्षेत्रीय बाजारों में बिकती थीं और कई बार दूर–दराज के क्षेत्रों तक भी पहुँचती थीं। किन्तु ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप मशीनों से निर्मित वस्तुओं का उत्पादन बढ़ गया और ये वस्तुएँ भारतीय बाजारों में बड़े पैमाने पर आने लगीं। इससे भारतीय हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के लिए प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हो गई। धीरे–धीरे कई पारंपरिक उद्योग कमजोर पड़ने लगे और कारीगरों की आर्थिक स्थिति प्रभावित होने लगी। इसके बावजूद कुछ उद्योग और उत्पादन क्षेत्र स्थानीय आवश्यकताओं के कारण अस्तित्व में बने रहे और वे सीमित स्तर पर व्यापारिक गतिविधियों का हिस्सा बने रहे। इन व्यापक परिवर्तनों के बावजूद बिहार के स्थानीय बाजार, व्यापारी समुदाय और पारंपरिक व्यापारिक नेटवर्क पूरी तरह समाप्त नहीं हुए। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच वस्तुओं के आदान–प्रदान की प्रक्रिया निरंतर जारी रही। पटना, गया, भागलपुर, मुजफ्फरपुर और अन्य नगर अब भी क्षेत्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र बने हुए थे, जहाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का क्रय–विक्रय होता था। इन बाजारों में कृषि उत्पादों के अतिरिक्त कपड़ा, मसाले, धातु वस्तुएँ और अन्य दैनिक उपयोग की सामग्री उपलब्ध रहती थी। स्थानीय व्यापारी, साहूकार, बनिये और बिचौलिए इस व्यापारिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वे ग्रामीण उत्पादकों से वस्तुएँ खरीदकर नगरों के बाजारों तक पहुँचाते थे और वहाँ से उन्हें अन्य क्षेत्रों में भेजते थे। इस प्रकार एक व्यापक व्यापारिक नेटवर्क अस्तित्व में बना रहा, जिसने आर्थिक गतिविधियों को निरंतर बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[35]

इसके अतिरिक्त परिवहन और संचार के साधनों में भी धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगे थे, जिनका व्यापारिक गतिविधियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। गंगा और उसकी सहायक नदियाँ अभी भी व्यापारिक परिवहन का प्रमुख माध्यम थीं और इनके माध्यम से बिहार का संपर्क बंगाल तथा उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों से बना हुआ था। व्यापारी नौकाओं के माध्यम से विभिन्न वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे, जिससे लंबी दूरी के व्यापार को भी प्रोत्साहन मिलता था। ब्रिटिश प्रशासन ने धीरे–धीरे सड़क मार्गों और अन्य परिवहन साधनों के विकास की दिशा में भी कुछ प्रयास किए, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क में वृद्धि हुई और व्यापारिक गतिविधियाँ अधिक संगठित होने लगीं।[36] इन परिवहन साधनों के विकास ने

बाजारों के बीच संबंधों को मजबूत किया और वस्तुओं के वितरण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया। इस प्रकार 1857 के विद्रोह से पूर्व बिहार की आर्थिक और व्यापारिक स्थिति एक संक्रमणकालीन अवस्था को दर्शाती है। एक ओर औपनिवेशिक नीतियों के कारण पारंपरिक आर्थिक और व्यापारिक ढाँचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे, वहीं दूसरी ओर स्थानीय बाजार व्यवस्था, व्यापारी समुदाय और व्यापारिक नेटवर्क पूरी तरह समाप्त नहीं हुए थे। व्यापारिक गतिविधियाँ नई परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालते हुए निरंतर चलती रहीं और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी रहीं। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि राजनीतिक परिवर्तन, औपनिवेशिक हस्तक्षेप और आर्थिक दबावों के बावजूद बिहार की व्यापारिक प्रणाली में एक प्रकार की निरंतरता, लचीलापन और अनुकूलन की क्षमता मौजूद थी। यही कारण है कि बदलती परिस्थितियों में भी यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से सक्रिय बना रहा और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक बिहार का व्यापारिक जीवन पूरी तरह समाप्त होने के बजाय नए स्वरूप में विकसित होता रहा।[37]

मुगल साम्राज्य के पतन से लेकर 1857 के विद्रोह तक का काल बिहार के इतिहास में गहरे राजनीतिक, प्रशासनिक और आर्थिक परिवर्तनों का महत्वपूर्ण दौर रहा। इस अवधि में सत्ता के निरंतर परिवर्तन मुगल प्रशासन की कमजोरी, बंगाल के नवाबों का प्रभाव तथा अंततः ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के उदय ने क्षेत्र की व्यापारिक गतिविधियों, बाजार संरचना और आर्थिक संस्थाओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया। मुगल शासन के पतन के साथ ही प्रशासनिक नियंत्रण कमजोर हुआ, जिससे व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और आर्थिक व्यवस्थाओं में कुछ अस्थिरता उत्पन्न हुई। इसके बाद बंगाल के नवाबों के शासन में अपेक्षाकृत प्रशासनिक स्थिरता स्थापित करने का प्रयास किया गया, जिसके परिणामस्वरूप व्यापारिक गतिविधियों को कुछ हद तक संरक्षण मिला और पटना, भागलपुर तथा अन्य नगर महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों के रूप में विकसित होते रहे। किन्तु अठारहवीं शताब्दी के मध्य से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के उदय ने बिहार की आर्थिक और व्यापारिक संरचना को एक नई दिशा प्रदान की। कंपनी की राजस्व नीतियों, व्यापारिक नियंत्रण और औपनिवेशिक हितों के अनुरूप अपनाई गई आर्थिक नीतियों के कारण उत्पादन, वितरण और व्यापार के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कई पारंपरिक व्यापारिक संस्थाएँ और कुटीर उद्योग कमजोर पड़ने लगे, जबकि नील, अफीम और नमकशोरा जैसी वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार को अधिक महत्व दिया जाने लगा। इसके बावजूद यह उल्लेखनीय है कि बिहार की व्यापारिक व्यवस्था पूरी तरह समाप्त नहीं हुई, बल्कि उसने बदलती राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की क्षमता प्रदर्शित की। स्थानीय व्यापारी वर्ग, ग्रामीण और शहरी बाजार, पारंपरिक व्यापारिक नेटवर्क तथा गंगा और अन्य नदियों के माध्यम से विकसित परिवहन प्रणाली क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण आधार बने रहे। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि राजनीतिक परिवर्तनों और औपनिवेशिक नीतियों ने बिहार के व्यापार को गहराई से प्रभावित किया, फिर भी उसकी मूल आर्थिक संरचना और व्यापारिक जीवन पूर्णतः नष्ट नहीं हुए, बल्कि उन्होंने नए स्वरूप में निरंतरता बनाए रखते हुए क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को जीवित रखा।

**संदर्भ :**

1. शर्मा, राम शरण, *भारत का आर्थिक इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृ. 112.
2. हबीब, इरफान, *मुगल भारत की अर्थव्यवस्था,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1999, पृ. 85–86.
3. चंद्र, सतीश, *मध्यकालीन भारत,* ओरिएंट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 2007, पृ. 222.
4. कुमार, धर्मा, *कैम्ब्रिज इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1983, पृ. 315–316.
5. वही, पृ. 144.
6. रिचर्ड्स, जॉन एफ., *मुगल साम्राज्य का इतिहास,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1993, पृ. 278–279.
7. चौधरी, के.एन., *एशियन ट्रेड एंड यूरोपियन इन्फ्लुएंस,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1978, पृ. 102–103.
8. सिन्हा, बी.पी., *बिहार का इतिहास,* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1976, पृ. 198–199.

9. सिन्हा, एन.के., *बंगाल का आर्थिक इतिहास,* मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली, 1965, पृ. 246.
10. मजूमदार, आर.सी., *द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल,* भारतीय विद्या भवन, मुंबई, 1960, पृ. 357.
11. वही, पृ. 118–119.
12. मुखर्जी, राधाकमल, *भारत की आर्थिक संरचना,* मैकमिलन, दिल्ली, 1962, पृ. 90–91.
13. ठाकुर, के.के., *बिहार का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास,* मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1989, पृ. 134–135.
14. चक्रवर्ती, अंजना, *ईस्ट इंडिया कंपनी एंड ट्रेड इन इंडिया,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2001, पृ. 167–168.
15. मार्शल, पी.जे., *बंगालः द ब्रिटिश ब्रिजहेड,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1987, पृ. 204.
16. चौधरी, के.एन., *पूर्वोक्त,* पृ. 172–173.
17. बर्नार्ड कोहन, *कॉलोनियलिज्म एंड इट्स फॉर्म्स ऑफ नॉलेज,* प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन, 1996, पृ. 59.
18. चंद्र, सतीश, *पूर्वोक्त,* पृ. 41–42.
19. गुप्ता, मनोज, *पूर्वी भारत का आर्थिक इतिहास,* शोध प्रकाशन, पटना, 2005, पृ. 108–109.
20. सिंह, रघुबीर, *बिहार में व्यापार और वाणिज्य का इतिहास,* ज्ञान प्रकाशन, पटना, 1998, पृ. 77.
21. प्रसाद, राजेंद्र, *बिहार का आर्थिक विकास,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975, पृ. 1146.
22. झा, दिनेश, *बिहार का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास,* ओरिएंट पब्लिशर्स, दिल्ली, 1994, पृ. 213.
23. वही, पृ. 55–56.
24. सिन्हा, आर.पी., *बिहार में औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था,* अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ, 2001, पृ. 190.
25. पांडेय, बी.एन., *भारत का आर्थिक इतिहास,* किताब महल, इलाहाबाद, 1980, पृ. 223.
26. सरकार, जदुनाथ, *फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर,* ओरिएंट लॉन्गमैन, कोलकाता, 1964, पृ. 301–302.
27. हंटर, डब्ल्यू.डब्ल्यू., *ए स्टैटिस्टिकल अकाउंट ऑफ बंगाल,* ट्रूबनर एंड कंपनी, लंदन, 1875, पृ. 99.
28. वही, पृ. 156–157.
29. बुकानन, फ्रांसिस, *एन अकाउंट ऑफ बिहार एंड पटना,* एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता, 1934, पृ. 75.
30. चौबे, रामानुज, *बिहार का प्रादेशिक इतिहास,* साहित्य भवन, पटना, 1996, पृ. 164.
31. वर्मा, अशोक, *औपनिवेशिक भारत की आर्थिक नीतियाँ,* लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, 1999, पृ. 48–49.
32. सिंह, ब्रजेश, *भारत में औपनिवेशिक व्यापार,* अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2003, पृ. 215.
33. दत्त, रोमेश चंद्र, *इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* केगन पॉल, लंदन, 1902, पृ. 121.
34. सेन, सुमित, *कोलोनियल ट्रेड एंड इकोनॉमी,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2005, पृ. 67–68.
35. वही, पृ. 143.
36. चौधरी, रंजीत, *अठारहवीं शताब्दी का भारतीय व्यापार,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1991, पृ. 202.
37. प्रसाद, राजेंद्र, *पूर्वोक्त,* पृ. 88–89.